भारतीय संस्कृति के निर्माण में सिन्धु घाटी सभ्यता, आर्य सभ्यता का योग

डॉ0 सरोज शर्मा, सहायक आचार्य, एस.बी.एन.(पी.जी.), महाविद्यालय, सिद्धमुख

प्रस्तावित शोध की भूमिका

किसी भी देश के इतिहास का अध्ययन उसके भौगोलिक अध्ययन के बिना अधूरा है। भारतवर्ष के भूगोल का इसके इतिहास पर प्रभाव प्रत्येक स्थल एंव घटनाओं में अंकित है। भौगोलिक परिस्थितियों का जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ता है इन दोनों की क्रिया–प्रतिक्रिया से इतिहास में भी परिवर्तन होते रहते हैं। किसी समय के ऐतिहासिक जीवन का अध्ययन करने के लिए स्थानीय मानवीय भूगोल पर ध्यान देना नितांत आवष्यक है। पृथ्वी की बनावट से राज्य की सीमाएँ परिवर्तित होती रहती है, प्रकृति की सहायता से उपजाऊ तथा आबाद भूमि पर विजेताओं का ध्यान लगा रहता है। इसके साथ ही जिस स्थान की प्रधानता बढ़ जाती है उस पर अधिकार करने के लिए विजेता प्रयत्न करता है।भूमि और जलवायु के प्रभाव से आर्थिक जीवन तथा मानसिक विचार सहज से जाने जा सकते हैं। नयी भौगोलिक परिस्थिति के कारण राज्य के आचार तथा कार्य शैली में भेद हो जाता है। भूमि की सहायता से ही विजेता सेवा तथा व्यापार के लिए सुगम मार्ग तैयार कर लेता है, जो सुचारू रूप से चालू होने पर देशोन्नति में बल देते हैं। उर्वरा भूमि में उत्पन्न अन्न से देशवासियों का पालन–पोषण किया जाता है और जनता में शक्ति संचारित होती है इस प्रकार देशोन्नति के प्रयत्न में मनुष्य के उद्योग मथा प्रयोग की जानकारी का आधार भूगोल भी माना जाता है। भारतीय इतिहास पर यहाँ के भूगोल का गहरा प्रभाव पड़ा है।

कन्डाल का कथन है कि भारत में प्रकृति का साम्राज्य है। प्राकृतिक परिस्थिति ही राजनैतिक सीमा पर पूर्ण अधिकार रखती है, अतःएव यह ध्रुव सत्य है कि देश की प्राकृतिक अवस्था का प्रभाव वहां के इतिहास पर सदा पड़ता है भारतवर्ष उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तट तक फैला है। इसका विस्तृत भूखण्ड़, जिसे एक उपमहाद्वीप कहा जाता है आकार में विषम चतुर्भुज जैसा है। यह लगभग 2500 मील लम्बा तथा 2000 मील चौड़ा है। रूस को छोड़कर विस्तार में यह समस्त यूरोप के बराबर है। यूनानियों ने इस देश को इण्डिया कहा तथा मध्यकालीन लेखकों ने इस देश को हिन्द अथवा हिन्दुस्तान के नाम से सम्बोधित किया।

प्रस्तावित शोध के सोपान

भारत एक विशाल देश है जैसा कि पहले बताया गया है इसके उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में समुद्र है। यहाँ के पहाड़ों नदियों, मरूस्थल तथा समुद्र ने हमेशा ही यहाँ के लोगों पर गहरी छाप छोड़ी है। पहाड़ों और समुद्रों जैसी कुछ भौगोलिक रूकावटें इस उपमहाद्वीप को अन्य देशों से अलग करती है। इन्हीं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ही भारतीय कुछ सीमा तक विदेषी आक्रमणों से रक्षित रहे है, तथा इन्हीं विशेषताओं के कारण ही भारत की एक विशिष्ट संस्कृति रही। यहाँ की गंगा घाटी में अनेक सभ्यताओं ने जन्म लिया। इनमें सिन्धु घाटी सभ्यता, आर्य सभ्यता यथा–ऋग्वैदिक, उत्तरवैदिक आदि ने भारतीय संस्कृति को पल्लवित किया।

प्रस्तावित शोध का महत्व

मौर्य, शुंग (ब्राह्मण), कण्व, सातवाहन, वाकाटक, गुप्त आदि राजवंषों ने यही अपने बड़े साम्राज्य स्थापित किये। इसी कड़ी में वर्धन वंष जिसको पुष्यभूति ने थानेष्वर में स्थापित किया। वर्धन वंष का महान शासक हर्षवर्धन था जिसके समय भारत में विविधतापूर्ण विकास हुआ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में हर्ष के समय की राजनीतिक व धार्मिक स्थिति को प्रस्तुत किया किया गया।

मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त ब्राह्मण साम्राज्य का उदय हुआ। इस साम्राज्य के अन्तर्गत प्रमुख शासक वंष थे – शुंग, कण्व, आंध्र, सातवाहन एवं वाकाटक। शुंग वंष की स्थापना 185 ई.पू. में पुष्यमित्र शुंग द्वारा अन्तिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की हत्या कर की गयी। पुष्यमित्र शुंग अपने शासन काल में यवनों से दो बार लड़ा दोनों बार ही यवन पराजित हुए। अष्वमेघ यज्ञ कर पुष्यमित्र ने पुनः ब्राह्मण धर्म को स्थापित करने का प्रयत्न किया था।

मगध में लगभग 100 वर्षों तक शुंगों का शासन रहा जिसके बाद बागडोर कण्व वंष के हाथ में चली गयी। ईसा की चौथी सदी से भारत में नये युग का आरम्भ हुआ मौर्यों के पतन के पष्चात दीर्घकाल तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही। कुषाणों एवं सातवाहनों ने राजनीतिक स्थिरता लाने का प्रयास किया। परन्तु वे उत्तर एवं दक्षिण भारत के क्षेत्रों तक ही सीमित रहे थे। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ई. में भारत के तीन राजवंषों (मध्य–भारत में नागषक्ति, दक्षिण भारत में वाकाटक, पूर्वी भारत में गुप्त वंष) से राजनीतिक समीकरण तेजी से बदलने लगें। इनमें गुप्त वंष सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ। गुप्त वंष के शासकों ने मौर्यों के पतन के पष्चात नष्ट हुई भारत की राजनीतिक एकता को पुनः अर्जित किया तथा लगभग सम्पूर्ण भारत को एक राजनीतिक छत्र

ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in December 2021, iajesm2014@gmail.com
के अधीन कर शक्तिशाली विदेषी आक्रान्ताओं का सफलतापूर्वक सामना कर भारत की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखा। गुप्तों की वंषावली के सन्दर्भ में हमें महत्त्वपूर्ण जानकारी समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त के विलसड़ स्तम्भ लेख तथा स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख से प्राप्त होती है।

प्रस्तावित शोध के उद्देष्य

1. गुप्त युग को भारतीय इतिहास में स्वर्ण–युग के नाम से जाना जाता है। गुप्त शासकों ने भारत की राजनीतिक एकता पुनः स्थापित की।
2. गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था तथा श्रीगुप्त का उत्तराधिकारीघटोत्कच था, किन्तु गुप्त वंष की शक्ति व प्रतिष्ठा में इस समय तक कोई भी वृद्धि होना जरूरी है।
3. गुप्त वंश की शक्ति व प्रतिष्ठा में वृद्धि चन्द्रगुप्त प्रथम के सिंहासनारूठ होने के पश्चात् हुई।
4. चन्द्रगुप्त ने अपने वंष की शक्ति को प्रतिस्थापित किया तथा उसे साम्राज्य का स्वरूप प्रदान किया।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

गुप्तकालीन समाजिक व्यवस्था विकास के शिखर पर थी। इस समय समाज चार वर्गों में विभाजित था। जातिव्यवस्था इस समय दिखाई नहीं देती। गुप्तकाल में ब्राह्मण व क्षत्रिय अपने से निम्न जाति के तथा वैष्य व शूद्र अपने से उच्च जाति के पेशे अपना सकते थे। इस समय अन्तर्जातीय अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के भी अनेक उदाहरण मिलते है। स्त्रियों का स्थान समाज में ऊँचा था। पत्नी को पुरूष की सहधर्मिणी माना जाता था। उच्चवर्ग की स्त्रियाँ सुशिक्षित होती थी। पत्नी को भी पति की सम्पति का अधिकारी बताया गया है। समाज में विधवा–विवाह का प्रचलन था परन्तु पर्दा प्रथा का अभाव था। सती–प्रथा के कुछ उदाहरण ही देखने को मिलते है। सामाजिक जीवन सुखी, समृद्ध और ऐष्वर्यपूर्ण था।

प्रस्तावित शोध के संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल, वासुदेवशरण (1958) : हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन,बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना।
2. अग्रवाल, वासुदेवशरण (1957) : कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन,बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना।
3. आचार्य, चतुरसेन (1998) : बुद्ध और बौद्ध धर्म, सोनाली साहित्य सदन,दिल्ली।
4. उपाध्याय, वासुदेव (2002) : गुप्त साम्राज्य का इतिहास, भाग 1–2,हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
5. उपाध्याय, वासुदेव (2005) : भारतीय सिक्के प्रथम संस्करण, भारतीभण्डार लीडर प्रेस, प्रयाग।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY